विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर
समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८६

नित नवल
आनन्द कुमार झा

छह नाटकक साहित्यिक आ
स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

नाटक | समाज | स्त्री-स्वायत्तता | रंगशिल्प

LXXXVI

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

गजेन्द्र ठाकुर

समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-८६ · LXXXVI

नित नवल आनन्द कुमार झा

छह नाटकक साहित्यिक आ स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२७

विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८६ · LXXXVI

नित नवल आनन्द कुमार झा

छह नाटकक साहित्यिक आ स्रोत -समीक्षात्मक अध्ययन

नाटक, समाज, स्त्री -स्वायत्तता आ रंगशिल्प

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२७

प्रकाशन-विवरण

ग्रन्थ-शृंखला : गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड–८६ · LXXXVI

समीक्षाधीन ग्रन्थ : नित नवल आनन्द कुमार झा

उपशीर्षक : छह नाटकक साहित्यिक आ स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

मूल समीक्षात्मक अध्ययनक लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

एहि खण्डक सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

प्रकाशकीय संस्था : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादकीय संस्करण : विदेह, २०२७

© 2027 Gajendra Thakur / Preeti Thakur

पुस्तक-विन्यास : ६ × ९ इञ्च; देवनागरी युनिकोड

समीक्षाक आधार आ सीमा

ई आलोचना गजेन्द्र ठाकुरक संग्रह ‘नित नवल आनन्द कुमार झा’मे उपलब्ध छह नाट्य-अध्ययनक सम्पादकीय पुनर्पाठ अछि। मूल नाट्यपुस्तकसभक स्वतंत्र पूर्ण प्रतिक सम्पूर्ण सत्यापन एहि संस्करणक आधार नहि अछि; तें रचनाक घटना, प्रकाशन-वर्ष आ मंचन सम्बन्धी विशिष्ट उल्लेख समीक्षाधीन अध्ययनक अनुसार पढ़ल जाए।

मूल नाटकक कथ्य, ठाकुरक आलोचनात्मक स्थापना आ एतयक सम्पादकीय मूल्यांकन—ई स्तर परस्पर अलग मानल गेल अछि। साहित्यिक निर्णय कलात्मक साक्ष्य, नैतिक प्रश्न आ स्रोतक सीमाक सावधान विवेक पर आधारित अछि।

विस्तृत विभाग-क्रम

प्रथम विभाग : ग्रन्थ, नाट्यदृष्टि आ सम्पादकीय कसौटी

द्वितीय विभाग : छह कृतिक क्रमिक आलोचनात्मक पुनर्पाठ

- टाकाक मोल (२०००)
- कलह (२००१)
- बदलैत समाज (२००२)
- धधाइत नवकी कनियाँक लहास (२००३)
- हठात परिवर्तन (२००५)
- मुक्ति यात्रा (२०१७)

तृतीय विभाग : साझा नाट्यसूत्र आ अन्तर

चतुर्थ विभाग : शिल्प, समय आ नाटकीय प्रमाण

पंचम विभाग : समेकित साहित्यिक निर्णय

षष्ठ विभाग : कृति-पत्र आ अध्ययन-सन्दर्भ

प्रथम विभाग : ग्रन्थ, नाट्यदृष्टि आ सम्पादकीय कसौटी

१. छह नाटक, छह समीक्षा आ एक विस्तृत रचनात्मक प्रश्न

‘नित नवल आनन्द कुमार झा’मे गजेन्द्र ठाकुर द्वारा लिखल छह साहित्यिक अध्ययन एकत्र अछि। अध्ययनक क्रम नाटकसभक उल्लिखित प्रथम प्रकाशन-वर्षक अनुसार अछि—‘टाकाक मोल’ (२०००), ‘कलह’ (२००१), ‘बदलैत समाज’ (२००२), ‘धधाइत नवकी कनियाँक लहास’ (२००३), ‘हठात परिवर्तन’ (२००५) आ ‘मुक्ति यात्रा’ (२०१७)। वर्षक्रम मात्र सुविधाजनक अनुक्रम नहि; एहिसँ एक नाटककारक सामाजिक चिन्ताक फैलाव, कथानक-संरचनाक बदलैत आकृति आ नाट्य-समाधानक पुनरावृत्त प्रवृत्तिसभ देखबाक अवसर भेटैत अछि। एक दिस विवाह, परिवार, दहेज आ उत्तराधिकारक प्रश्न अछि; दोसर दिस सार्वजनिक प्रतिष्ठा, पंचायत, सैनिक कर्तव्य, स्त्री-संगठन आ राज्यसत्ताक भाषा प्रवेश करैत अछि।

छहू नाटकक विषय अलग रहितहुँ रचनासभमे संकट उत्पन्न करबाक एक साझा युक्ति देखाइत अछि। घर अथवा निकट सम्बन्धमे उठल तनाव क्रमशः सार्वजनिक स्थलपर पहुँचैत अछि, जतय सामुदायिक निर्णय, संस्था, भीड़ अथवा अधिकारक दावा ओकर अर्थ निर्धारित करबाक प्रयास करैत अछि। ‘टाकाक मोल’क विवाह-मण्डप, ‘बदलैत समाज’क लोक-आरोप आ पंचायत, ‘हठात परिवर्तन’क सैनिक सूचना आ ‘मुक्ति यात्रा’क महिला-मण्डली—ई सभ केवल कथा-स्थान नहि, सामाजिक निर्णयक रंगभूमि छथि। गजेन्द्र ठाकुरक समीक्षा एहि फैलावकेँ सामाजिक नैतिकताक संग नाटकक दृश्य-रचनाक प्रश्न बनबैत अछि।

एहि सम्पादकीय पुनर्पाठमे मूल नाटक, नाटकपर गजेन्द्र ठाकुरक समीक्षात्मक स्थापना आ वर्तमान आलोचनाक निर्णय—ई तीन स्तर अलग राखल गेल अछि। उपलब्ध आधार ठाकुरक छह विस्तृत अध्ययनक पाठ अछि; एतय कृतिसभक स्वतन्त्र संस्करणक सम्पूर्ण पाठ-सत्यापन भेल हो, एहन दावा नहि कएल जा रहल अछि। ताहि कारण कथा अथवा मंचनक विशिष्ट विवरण पढ़ैत काल

ओकरा मूल समीक्षाक उद्धृत साक्ष्यक रूपमे बुझबाक चाही। आलोचनाक मूल्य तखन बढ़ैत अछि जखन ओ अपन प्रमाणक सीमा चिन्हैत अछि।

२. विषयक महत्त्व आ कलात्मक सिद्धि एक नहि

दहेज-विरोध, स्त्रीक अधिकार, रोगी व्यक्तिक गरिमा, पारिवारिक सहअस्तित्व आ सामुदायिक न्याय सामाजिक दृष्टिएँ आवश्यक विषय छथि। मुदा नाटकक सफलता केवल सही नैतिक पक्ष चुनलासँ सिद्ध नहि होइत। कथा कोना बढ़ैत अछि, पात्रक बदलैत निर्णयक कारण की अछि, दृश्य कतए बन्द होइत अछि, संवाद ककरा सुनायल जाइत अछि आ अन्तिम समाधान पूर्ववर्ती संकटसँ कतेक स्वाभाविक रूपेँ जन्म लैत अछि—एहि कसौटी पर कलात्मक सफलता परखल जाइत अछि। ठाकुरक अध्ययनसभ जखन उद्देश्य आ परिणतिक बीच अन्तर रखैत अछि, तखन ओ प्रशंसात्मक परिचयसँ आगाँ बढ़ैत अछि।

अनेक ठाम नाटककार असमान शक्ति-सम्बन्धकेँ स्पष्ट संकेतमे बदलैत छथि। अर्थक लोभी बिचौलिया, अभिमानी अभिभावक, अधिकारवादी परिवार-प्रधान, षडयन्त्रकारी राजनीतिक पात्र अथवा राष्ट्रहितक वक्ता पहिलहि प्रवेशमे दर्शककेँ अपन पक्ष स्पष्ट करबैत अछि। लोकमंचक श्रव्य-संप्रेषण लेल ई स्पष्टता सहायक भऽ सकैत अछि। एकरे संग ई पात्रक अन्तःद्वन्द्व, निर्णयक अनिश्चितता आ नाटकीय आश्चर्यकेँ सीमितो कऽ सकैत अछि। आलोचनाकेँ एहि दू प्रभावक सन्तुलित लेखा राखबाक चाही।

३. सामाजिक अनुभवसँ रंगव्याकरण धरि

पाठ-केन्द्रित नाट्यालोचनामे संवाद-मात्र पर निर्भर रहब अपर्याप्त अछि। पात्रक चुप्पी, मंचपर दूरी, प्रवेशक समय, नेपथ्यक आवाज, दरवाजाक खुलब-बन्द होएब, पत्रक रोकल जाएब, सार्वजनिक सभामे नाम उच्चारल जाएब अथवा रोगग्रस्त देहक मंचीय उपस्थिति—ई सभ अर्थ उत्पन्न करैत अछि। 'धधाइत नवकी कनियाँक लहास'मे सन्देश-व्यवधान, 'टाकाक मोल'मे विवाहक उत्सव, 'बदलैत समाज'मे अफवाहक प्रसार आ 'मुक्ति यात्रा'मे नामक दुरुपयोग एहि दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण छथि।

छह अध्ययनमे इतिहास, समाजशास्त्र, स्त्रीवादी प्रश्न आ नाटचशास्त्रीय विवेचनक सहारा भेटैत अछि। एहि सिद्धान्तसभक उपयोग केवळ तैयार वर्गीकरण चिपकयबाक लेल नहि, बल्कि पाठमे उठल समस्या अधिक तीक्ष्ण करबाक लेल फलदायी अछि। जे ठाम संवादक सहारे कृतिमे विरोधी आवाज जीवित रहैत अछि, ओतय तुलना निष्कर्ष खोलैत अछि; जे ठाम सब पात्र अन्तमे एकहि आदर्श-वाक्यमे समाहित भऽ जाइत छथि, ओतय आलोचनाकेँ प्रश्न बचा कऽ राखबाक उत्तरदायित्व अछि।

द्वितीय विभाग : छह कृतिक क्रमिक आलोचनात्मक पुनर्पाठ

४. 'टाकाक मोल' : विवाहक बाजार आ मोलक नैतिक उलटबाँसी

'टाकाक मोल'क प्रमुख साहित्यिक युक्ति ई अछि जे टाका, जे सामान्यतः मूल्य मापबाक माध्यम अछि, अपने मनुष्यक मूल्य निर्धारित करबाक दावेदार बनि जाइत अछि। गजेन्द्र ठाकुर गरीब झाक विवशता, प्रभाक असहमति, प्रभाकरक प्रेम, समरक बदलैत विवेक, लीलाधर बाबूक प्रतिष्ठाबोध आ दलाल-काकाक कारोबारकेँ एक आपसी शक्ति-सम्बन्धमे पढ़ैत छथि। एहि पाठक महत्त्व ई नहि जे ओकरा दहेज-विरोधक नैतिकता मालूम अछि; महत्त्व ई जे आर्थिक गणना प्रेम, शिक्षा आ सम्बन्धक भाषाकेँ कोना विस्थापित करैत अछि।

तीन अङ्कक संरचना निजी घरसँ सार्वजनिक विवाह-मण्डप धरि बढ़ैत अछि। आरम्भमे आर्थिक अभाव परिवारक चिन्ता अछि; विवाहक समय वही अभाव सार्वजनिक अपमान बनैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक अध्ययन एहि रूपान्तरणकेँ पाठक निर्णायक नाटचगति मानैत अछि। मण्डपक भीड़ केवल पृष्ठभूमि नहि; ओकर उपस्थिति दहेजक शर्तकेँ सामाजिक निगरानी, भय आ प्रतिष्ठाक प्रदर्शनमे बदलैत अछि। दर्शककेँ एहि ठाम व्यक्तिक दुःख मात्र नहि, सामूहिक परम्पराक क्रियाशील तन्त्र देखाइत अछि।

प्रभाक विरोधक विश्लेषण अध्ययनक सर्वाधिक जीवित पक्ष अछि। शुरूआतमे बेटी अपन अस्तित्वकेँ पिताक आर्थिक बोझ जकाँ अनुभव करैत अछि, मुदा चरमबिन्दुपर ओ अपन असम्मान स्वीकार करबाक अस्वीकार करैत छथि। ई

क्रम स्त्री-स्वायत्तताक नाटकीय अभिव्यक्ति अछि। तथापि अन्तमे सामूहिक स्वीकृति आ उचित विवाहक व्यवस्था ओकर स्वतंत्र निर्णयक सम्पूर्ण सम्भावना केतेक खुलल रखैत अछि, ई प्रश्न ठाकुरक आलोचनामे उपस्थित अछि। स्त्रीक 'नहि'कैँ समाजक पसिन्न 'हाँ'मे बदलनाइ स्वयं एक नब नैतिक दबाव भऽ सकैत अछि।

समर आ प्रभाकर दहेज-विरोधक एकरूप प्रवक्ता नहि छथि। एक पात्र प्रेमक विश्वास लऽ संघर्ष करैत अछि; दोसर विवाहक वास्तविक व्यवस्थामे अन्याय देखि अपन निर्णय बदलैत अछि। एहि अन्तरक कारण नाटकक विवेक बहुकेन्द्रीय बनबाक अवसर पबैत अछि। मुदा जखन विरोधी पात्र शीघ्र आत्मालोचना करैत छथि आ समाज एकमत भऽ जाइत अछि, तखन आर्थिक शोषणक दीर्घकालिक संरचना बहुत जल्द नैतिक उद्घोषणामे समेटल जाएबाक खतरा रहैत अछि। ठाकुरक अध्ययन एहि जोखिमकैँ पहिचान करबैत अछि; भविष्यक निकटपाठमे मोड़क हर दृश्यक समय आ कारणक अधिक सूक्ष्म तुलना उपयोगी होयत।

दलाल-काका आ चेलाक प्रसंग व्यङ्ग्यक माध्यमैँ सामाजिक व्यवहारक असामान्यता उघारैत अछि। बिचौलियाक बोलचाल, मोलतोल, लोकलाज आ हास्य नाटककैँ सम्भावित मंचीय ऊर्जा दैत अछि। मुदा पुस्तकमे उल्लेखित आरम्भिक मंचनक सूचना आ वास्तविक रंग-अभिनयक ऐतिहासिक परिणाम अलग प्रमाण-विषय छथि। समीक्षा एतय मंचन-संभावना चिन्हबाक अधिकार रखैत अछि, मंचनक प्रभावक अतिरंजित घोषणा करबाक नहि। 'टाकाक मोल'क महत्त्व एकरे सामाजिक बोध आ कलात्मक असमानताक संग पढ़लासँ अधिक स्पष्ट होइत अछि।

५. 'कलह' : परिवारक झगड़ामे अर्थ आ अधिकारक राजनीति

'कलह'क आलोचनामे घरेलू तकरारकैँ स्वभावक दोष मात्र मानल नहि गेल अछि। आकाशक बेरोजगारी, सुरेश्वर बाबूक अधिकार, आरती आ सुमित्राक तनाव, राजीव-कोमलक सम्बन्ध तथा सम्पत्ति आ निजी चिट्ठीक प्रसंग देखबैत अछि जे परिवार कतेको असमान निर्भरता पर चलैत अछि। आर्थिक योगदान, निर्णयक अधिकार आ मान-सम्मानक वितरण बराबर नहि होए तऽ सामान्य

संवादो शक्ति-परीक्षण बनि जाइत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक समीक्षाक उपलब्धि एहि संकटक सामाजिक कारण-श्रृंखला देखेबामे अछि।

नाटकक तीन अङ्क घरेलू आँगन, शहरक आवास आ चिकित्सालय जकाँ बदलैत स्थलसभमे फैलैत अछि। स्थल बदललासँ समस्या अन्तर्धान नहि होइत; एकर रूप बदलैत अछि। परिवारक भीतर आर्थिक असुरक्षा जे आरम्भमे संवादक कटुता छल, ओ आगाँ त्रासद घटनाक पृष्ठभूमि बनैत अछि। औद्योगिक दुर्घटना, आकाशक मृत्यु आ सन्तान-जन्मक निकटता करुण अनुभूतिकेँ तीक्ष्ण बनबैत अछि। तथापि एतेक घटना एकत्र होएब सँ घटनाक प्रायिकता आ नाटकीय विश्वसनीयता पर प्रश्न उठैत अछि। दुर्घटनाकेँ सामाजिक परिणाम बुझब आ कथानकक सुविधा मानब—दुनू सम्भावनाक प्रमाण-परीक्षण जरूरी अछि।

स्त्री-पात्रक बहसकेँ केवल ‘घर बिगाड़निहार’ अथवा ‘घर बचाबनिहार’क नैतिक साँचे मे राखलासँ नाटकक यथार्थ सिमटि जाइत। सुमित्रा आ आरतीक असहमति, कोमलक निजी जीवन, रोजगार आ सम्पत्तिक बीच ककरा बोलबाक अधिकार भेटैत अछि, एहि प्रश्नक जगह आवश्यक अछि। उद्धृत अध्ययन जखन आर्थिक निर्भरता आ पितृसत्तात्मक अधिकारक सम्बन्ध पहिचानैत अछि, तखन ओ सरल पारिवारिक उपदेशसँ अलग आलोचनात्मक धरातल बनबैत अछि। मुदा पात्रक स्वतन्त्र कथन आ ओकरा देल गेल नाटकीय समयक विस्तृत पाठ-साक्ष्य आरो जोड़ल जा सकैत अछि।

भाषिक स्तर पर मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजीक आवाजाहीकेँ मंचीय चरित्रांकनक साधन मानल गेल अछि। सामाजिक स्थिति आ आधुनिकताक आकांक्षा भाषाक चयनमे प्रकट होइत अछि। ई दृष्टि उपयोगी अछि, किएक तऽ मिश्रित भाषा केवळ शुद्धताक प्रश्न नहि, पात्रक समाजस्थितिक संकेत होइत अछि। तथापि एकरा सिद्ध करबाक लेल अलग-अलग पात्रक विशिष्ट संवादक तुलना आवश्यक अछि—कोन प्रसङ्गमे कोन भाषा, कोन सम्बोधन आ कोन मौन उपस्थित अछि।

अन्तिम उपदेश यदि त्रासद घटना-संचयक तुरन्त बाद प्रस्तुत हो, तऽ संकटक अघुलल प्रश्न अनसुना रहि सकैत अछि। 'कलह'मे परिवार केवल समझौता करबाक स्थल नहि; असमान श्रम, निजी स्वतंत्रता आ उत्तराधिकारक संस्थागत प्रश्न सेहो अछि। ठाकुरक समीक्षा एहि दुविधाक दिशा देखबैत अछि। ताहि कारण नाटकक स्थायी मूल्य करुण परिणतिमात्र नहि, ओहि संरचना पर प्रश्न उठायब अछि जाहिमे करुण परिणति सम्भव बनैत अछि।

६. 'बदलैत समाज' : अफवाह, चरित्रहनन आ सार्वजनिक सत्य

'बदलैत समाज'क शीर्षक परिवर्तनक आश्वासन दैत अछि, मुदा नाटकक भीतर परिवर्तनक संघर्ष अपन नकारात्मक रूप पहिने देखबैत अछि। अवधेशक रोग, शोभाक असुरक्षित स्थिति, दीपकक मित्रधर्म आ स्थानीय राजनीतिक षडयन्त्र एहन परिवेश बनबैत अछि जतय व्यक्तिक चरित्र पर लागल आरोप राजनीतिक लाभक साधन भऽ सकैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक आलोचना एहि चरित्रहननकेँ सामाजिक विघटनक व्यक्तिगत प्रसंग मात्र नहि, स्थानीय सत्ताक एक प्रक्रिया मानैत अछि।

चारि अङ्कक घटनाक्रममे अफवाहक निर्माण, ओकर प्रसार आ सामूहिक सत्यक रूपमे ओकर स्थापना महत्त्वपूर्ण अछि। कोनो आरोप मात्र कहि देलासँ प्रभावी नहि बनैत; ओ बेरा-बेरी कहला, विश्वसनीय स्रोतक आभास देलासँ, सार्वजनिक मंचपर दोहराओलासँ आ विरोधी व्यक्तिक मौनकेँ सहमतिक रूपमे पढ़लासँ प्रभावी बनैत अछि। समीक्षाक एहि संकेतसँ नाटकक कथानककेँ 'सत्य बनबैत भाषा'क अध्ययन रूपमे देखल जा सकैत अछि। आलोचनाक अगिला चरणमे अफवाह ककर मुखसँ ककरा धरि पहुँचैत अछि, ओकर दृश्य-दर-दृश्य नक्शा उपयोगी होयत।

रोग आ धार्मिक विश्वासक सन्दर्भमे भावनात्मक सहारा आ चिकित्सकीय ज्ञानक अधिकार अलग राखब आवश्यक अछि। नाटकमे जँ रोगक कारणेँ परिवार असुरक्षित बनैत अछि, तऽ एहि असुरक्षाक उपयोग राजनीतिक शक्तिसभ करैत छथि। दीर्घकालिक रोगक संग जुड़ल अनिश्चितता लोकविश्वासक भाषा खोलि सकैत अछि, मुदा ओहि भाषाकेँ चिकित्सा-साक्ष्यक स्थान देब उचित नहि।

ठाकुरक अध्ययन एहि द्वन्द्वकेँ सामाजिक नाटकक विश्लेषणक उपयोगी आधार बनबैत अछि।

शोभाक चरित्र पर आरोप लगब सार्वजनिक सत्ता द्वारा स्त्रीक देह आ प्रतिष्ठा नियंत्रित करबाक कोशिश अछि। नाटकमे विधवा-पुनर्विवाह आ समाजक सहमतिक प्रश्न सेहो उठैत अछि। ई सम्भावित सुधार स्वयं अधिकारक पर्याय नहि; स्त्रीक इच्छा, निर्णयक समय आ भविष्यक विकल्प स्वतंत्र रूपेँ उपस्थित रहबाक चाही। समीक्षामे एहिपर उठल प्रश्न महत्त्वपूर्ण अछि जे सार्वजनिक निर्दोषता घोषित होएबाक बादो स्त्रीक व्यक्तिगत स्वायत्तता सीमित रहि सकैत अछि।

अन्तिम न्यायिक हस्तक्षेप अथवा सार्वजनिक निर्णय कथानकक तनावकेँ सुलझेबाक माध्यम बनैत अछि। मुदा आरोपक राजनीतिक निर्माणक वास्तविक जटिलता संस्था मात्रक एक घोषणासँ नहि मेटाइत। न्याय ककर साक्ष्य पर आधारित अछि, ककरा बोलबाक अवसर भेटल, आरोपक ऐतिहासिक क्षति केना सुधरल—एहि प्रश्नसभकेँ दृश्यगत प्रमाणसँ परखबाक चाही। एहि अर्थमे ‘बदलैत समाज’ सामाजिक परिवर्तनक उत्सवसँ अधिक सत्य, सत्ता आ स्त्री-प्रतिष्ठाक अस्थिर सम्बन्ध पर विचारक नाटक बनैत अछि।

७. ‘धधाइत नवकी कनियाँक लहास’ : शीर्षकक भय आ सम्बन्धक संकट

‘धधाइत नवकी कनियाँक लहास’ पहिल दृष्टिमे मृत्यु आ हिंसाक भयावह छवि उपस्थित करैत अछि। मुदा गजेन्द्र ठाकुरक अध्ययन अनुसार तीन अङ्क आ नअ दृश्यक कथा मृत्यु पर नहि, जीवन-रक्षा आ परिवारक पुनर्मिलन पर पहुँचैत अछि। एहि अन्तरसँ शीर्षकक अर्थ शाब्दिक घटनासँ हटि सम्बन्धक भीतर पजरैत आघात, भय आ विखण्डनक रूपक बनैत अछि। आलोचनाकेँ एतय सनसनीपूर्ण शीर्षकक प्रभाव आ वास्तविक नाटयगतिक अनुपात जाँचबाक अवसर अछि।

शिखा-समीरक दाम्पत्य-विवाद परिवारक अनेक असमान निर्भरता खोलैत अछि। मेघेश्वरक रोग, रितेशक बाधित पढ़ाइ, उपचार लेल आर्थिक अभाव, पैतृक सम्पत्तिक विवाद आ गाम-नगरक दूरी मिलि ई स्पष्ट करैत अछि जे एक नब दाम्पत्यक व्यक्तिगत निर्णय अकेले घटैत नहि अछि। संयुक्त परिवारक

आदर्श आ दम्पतीक स्वायत्त रहबाक इच्छा परस्पर भिड़ैत छथि। नाटक जँ केवल बहुरियाक असहमतिकेँ दोष मानि चलैत अछि, तखन ई आर्थिक आ सामाजिक पृष्ठभूमि ओझरा सकैत अछि।

रोकल गेल पत्र एहि नाटकक विशेष अर्थवान रंग-वस्तु अछि। जे सूचना एक पात्र धरि नहि पहुँचैत, ओकर अभाव दूसरे पात्रक निर्णय बदलैत अछि; दर्शकक जानकारी आ पात्रक जानकारीक बीच अन्तर पैदा होइत अछि। एहि तकनीकसँ नाटकीय विडम्बना आ गलतफहमीक तनाव बनैत अछि। मुदा संयोगवश रोकल गेल एक संदेश पूर्ण परिवारक संकटक अत्यधिक आधार बनि जाए, तऽ रचना कारण-कार्य सम्बन्धक कठोर परीक्षा माँगैत अछि। पत्रक नाटकीय उपयोगक आलोचना एहि दू पक्षक संग होएबाक चाही।

मेघेश्वरक रोगक उपचार लेल टाकाक प्रश्न परिवारक नैतिक दावाकेँ जाँचैत अछि। कर्तव्यक उच्चारण करनिहार पात्र वास्तवमे उपचारक संसाधन जुटबैत छथि कि नहि, एहि अन्तरक कलात्मक अर्थ अछि। बीमारी भावुक दृश्यक साधन मात्र नहि; आर्थिक असुरक्षा आ निर्भर श्रमक मूर्त प्रसंग अछि। ठाकुरक अध्ययन जखन परिवारक प्रेम आ सम्पत्तिक झगड़ाकेँ एकहि संकटमे देखैत अछि, तखन ओ 'नीक परिवार'क अमूर्त घोषणासँ आगाँ बढ़ैत अछि।

नाटकक सम्भावित समस्या ओकर अन्तिम मेल-मिलापमे अछि। शिखाक इच्छा, घरेलू श्रमक बँटवारा, अलग घर बसबाक अधिकार आ बीमार अभिभावकक देखभालक प्रश्न वास्तवमे सुलझैत अछि कि स्त्रीक आत्मसमर्पणक भाषा एहि सभकेँ ढँकि दैत अछि? ई आलोचनात्मक प्रश्न रचनाक नैतिक उद्देश्यक अपमान नहि, एकर नाटकीय सत्यापन अछि। शीर्षक जतेक कठोर भय उत्पन्न करैत अछि, समापनकेँ ओतबे सावधानीसँ अर्जित होएबाक चाही।

८. 'हठात परिवर्तन' : सैन्य अनुशासन, घर आ आत्मबोध

'हठात परिवर्तन' परिवारक भीतर सैनिक अनुशासन आ व्यक्तिगत विचलनक द्वन्द्व स्थापित करैत अछि। अवकाशप्राप्त ब्रिगेडियर कृष्णचन्द्र प्रतापक घरमे गोपालक कर्तव्यनिष्ठा आ गिरिधरक आचरणक अन्तर कथाक प्रारम्भिक संरचना

बनैत अछि। शालिनी, सरस्वती, रंजनी आ बालक रोहन एहि दू पुरुष-प्रतिमाक बीच अपन-अपन अनुभव लऽ उपस्थित छथि। गजेन्द्र ठाकुरक अध्ययन एहि कथाकेँ राष्ट्रप्रेमक घोषणामात्र नहि, पारिवारिक करुणा आ व्यक्तिक नैतिक परिवर्तनक जटिल सम्बन्धक रूपमे पढ़बाक कोशिश करैत अछि।

नाटकमे वीरता आ करुणाक संयुक्त प्रयोग विशेष ध्यानाकर्षक अछि। सैन्य बलिदानक सूचना, परिवारक प्रतीक्षा, अनुपस्थित व्यक्तिक स्मृति आ घरक भीतर भावनात्मक अशान्ति मंचपर ओहि घटनाकेँ उपस्थित करैत अछि जे प्रत्यक्ष देखाओल नहि गेल होइ। सूचना ककरा द्वारा पहुँचैत अछि, परिवार ओकरा कोना ग्रहण करैत अछि आ दर्शककेँ कतेक पूर्वज्ञान अछि—ई सभ वीररसक प्रभाव निर्धारित करैत अछि। राष्ट्रक नामपर उच्चरित वाक्य आ परिवारक व्यक्तिगत दुःखक अनुपात आलोचनाक केन्द्रीय कसौटी रहबाक चाही।

गिरिधरक परिवर्तनकेँ 'हठात' कहल गेल अछि। शीर्षक अपने परिवर्तनक गति पर प्रश्न उठबैत अछि। चरित्रक गलत निर्णय, अनुपस्थिति आ पुनरागमन जँ अन्तमे आकस्मिक आत्मबोधमे बदलि जाइत अछि, तऽ दर्शक ओकर नैतिक इच्छा स्वीकार करितो परिवर्तनक कारण-श्रृंखला पर संशय रखि सकैत अछि। ठाकुरक समीक्षामे एहि वेग पर उठल प्रश्न उपयोगी अछि। परिवर्तनक स्वीकार्यता लेल घटना-घटना बीच व्यक्तिक आत्मसंघर्ष, पछतावा आ कर्मक सम्बन्ध स्पष्ट रहबाक चाही।

स्त्री-पात्रसभ सैनिक-परिवारक प्रतिष्ठाक रक्षक मात्र छथि कि हुनकर अपन संघर्ष अछि? शालिनीक दाम्पत्य अनुभव, सरस्वतीक मातृत्व, रंजनीक असुरक्षा आ बालकक जिज्ञासा अलग-अलग अन्तःदृष्टि उत्पन्न कऽ सकैत अछि। प्रत्येककेँ पुरुषक नैतिक उत्थानक पार्श्वप्रमाण बना देब नाटकक सम्भावना छोट करैत अछि। समीक्षा जखन स्त्रीक सीमित निर्णय-अवकाश पर टिप्पणी करैत अछि, तखन ओ वीरता आ पारिवारिक कर्तव्यक प्रचलित मूल्यक्रमकेँ पुनः परीक्षा लेल खोलैत अछि।

वाचिक अभिनय, सामूहिक भाव-उत्कर्ष आ राष्ट्रीय कर्तव्यक शब्दावली रचनाक सार्वजनिक मंचीय प्रभाव बढ़ा सकैत अछि। तथापि देशप्रेमक महत्त्व आ नाटकीय रूपक प्रभाव एके निर्णय नहि अछि। कोन ठाम संवाद व्यक्ति-विशेषक

अनुभवसँ उपजैत अछि, आ कोन ठाम ओ सामान्य घोषणाक रूप लेइत अछि—ई विभाजन आवश्यक अछि। 'हठात परिवर्तन'क उपयोगी आलोचनात्मक स्थान एहिमे अछि जे ओ सार्वजनिक वीरता आ निजी जीवनक नैतिक कठिनाइकेँ एक साथ सोझाँ आनैत अछि।

९. 'मुक्ति यात्रा' : स्त्रीक आवाज आ ओकर नामपर सत्ता-संघर्ष

'मुक्ति यात्रा'क कथ्य अन्य पाँच नाटकसँ अधिक प्रत्यक्ष रूपेँ संगठन, प्रशासन आ राजनीतिक हिंसाक दिशामे फैलैत अछि। आरती नारायण विवाह, देह, श्रम आ स्वतन्त्र निर्णय पर प्रश्न रखैत छथि; बुजाजी आ मालती दीदीक सहयोगेँ महिला-मण्डली सामूहिक प्रतिरोधक स्थान बनैत अछि। बादक घटनामे आरतीक नामक दुरुपयोग, अपहरण, सुरक्षा-तन्त्र आ हिंसक गुटक उपस्थिति मुक्तिक परिभाषाकेँ अनिश्चित बना दैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक अध्ययन एही अन्तरकेँ नाटकक मुख्य प्रश्न मानैत अछि—मुक्तिक भाषा ककरा हाथमे अछि, आ ओहि भाषाक प्रामाणिक आवाज के?

नाटकक आरम्भिक वैचारिक संवाद स्त्रीक अधिकारक अनेक स्तर खोलैत अछि। विवाह करब कि नहि करब, आर्थिक निर्भरता स्वीकार करब कि नहि, संगठनमे बोलबाक अधिकार पायब, अपन देह आ जीवनक निर्णय लेब—ई सभ एक-दोसरासँ जुड़ल होइतहुँ एके प्रश्न नहि छथि। आरतीक व्यक्तित्व जँ केवल घोषणाक माध्यम रहि जाए, तऽ ओकर भावनात्मक द्वन्द्व ओझरा सकैत अछि; जँ ओ अन्यायपूर्ण व्यवस्था भीतर असुरक्षित किन्तु निर्णायक स्त्री बनि उठैत छथि, तखन नाट्य अर्थ अधिक गाढ़ होइत अछि। ठाकुरक समीक्षामे ई दोहर कसौटी उपस्थित अछि।

महिला-मण्डली एक संस्था रूपमे महत्त्वपूर्ण अछि। निजी असहमति जखन सामूहिक अभ्यास बनैत अछि, तखन संगठनक भीतर नेतृत्व, संसाधन, भरोसा आ प्रतिनिधित्वक प्रश्न उठैत अछि। नाटक एतय अधिक जटिल बनैत अछि, किएक तऽ महिला आन्दोलनक नामक आड़मे विरोधी शक्ति अपराध करबाक प्रयत्न करैत अछि। कोनो व्यक्तिक सार्वजनिक छविक अपहरण आ वास्तविक देहक अपहरणक बीचक समानान्तर रचना आलोचनाक सघन उपलब्धि अछि।

मुदा एहि समानान्तर अर्थकेँ वास्तविक मंचीय क्रियामे कतेक सुसंगत बनाओल गेल अछि, से पुनः परखबाक चाही।

'मुक्ति यात्रा'क उत्तरार्धमे सुरक्षा, पुलिस, षडयन्त्र आ हिंसक प्रतिकारक कारण घटनाक गति तेज होइत अछि। एहन गति रोमाञ्चक रङ्ग देइत अछि, परन्तु त्वरित मोड़, संयोग-निर्भर उद्घाटन अथवा यान्त्रिक वस्तुक अविश्वसनीय कार्य नाटकक सम्भाव्यता पर प्रश्न उठबैत अछि। अध्ययनमे कृत्रिम कौआ-जकाँ यन्त्रक उल्लेख दृश्य-विन्यासक एक कठिन उदाहरण अछि। ई वस्तु निगरानी आ गुप्त जानकारीक प्रतीक भऽ सकैत अछि, मुदा प्रतीकक सामर्थ्य लिखित क्रियाक विश्वसनीयता सँ अलग जाँचल जाएबाक चाही।

राज्यसत्ता आ अपराधी हिंसाक बीच दबाओल स्त्री-स्वर नाटकक नैतिक केन्द्र अछि। तथापि हिंसक समूहक पराजय अपने स्त्री-मुक्तिक अन्तिम सिद्धि नहि; संस्थाक भरोसा, पीड़िताक सुरक्षित जीवन, व्यक्तिगत चुनाव आ संगठनक भविष्यक प्रश्न बचि रहैत अछि। शीर्षकमे 'यात्रा' शब्द स्वयं अपूर्णता आ अगिला मार्गक संकेत दैत अछि। एही कारण गजेन्द्र ठाकुरक पाठ जखन अन्तिम विजयक सरल घोषणा सँ बचि मुक्तिक असमाप्त प्रक्रिया पर ध्यान दैत अछि, तखन ओकर सम्पादकीय महत्त्व बढ़ैत अछि।

तृतीय विभाग : साझा नाटचसूत्र आ अन्तर

१०. धन, रोजगार आ नैतिक प्रतिष्ठाक परस्पर सम्बन्ध

'टाकाक मोल'मे पैसा विवाहक सौदा बनैत अछि, 'कलह'मे रोजगारक अभाव घरेलू अधिकारक असन्तुलनक संग जुड़ैत अछि, 'धधाइत नवकी कनियाँक लहास'मे उपचार आ सम्पत्तिक खर्च संकटकेँ गाढ़ करैत अछि। एहि तीनू प्रसङ्गमे धन एकरूप प्रतीक नहि अछि। कतहु ओ प्रत्यक्ष माँग अछि, कतहु निर्भरता, कतहु जीवन-रक्षाक साधन। समेकित आलोचनाक लेल एहि भेदक संरक्षण आवश्यक अछि; अन्यथा आर्थिक असमानता नामक सामान्य पद रचनासभक अलग-अलग दृश्यक ठोस अर्थकेँ ढँकि देत।

गजेन्द्र ठाकुरक समीक्षासभक एक उपयोगी प्रवृत्ति ई अछि जे समाज-सुधारक घोषणाकेँ कथाक समाधान मानि नहि छोड़ैत छथि। उदाहरणस्वरूप दहेज-विरोधक प्रतिज्ञा आ दहेजक पुनरुत्पादन रोकबाक संस्थागत साधन अलग होइत अछि; घरमे मेल-मिलाप आ आय-श्रमक वास्तविक न्यायसंगत बाँट अलग; इलाज लेल कर्तव्यक उपदेश आ चिकित्सा-संसाधन उपलब्ध करेनाइ अलग। ई अन्तर रचनासभक आजुक प्रासङ्गिकता बढ़बैत अछि।

११. स्त्री-पात्रक मुखरता आ स्वायत्त निर्णयक अन्तर

प्रभा, आरती, शोभा, शिखा, शालिनी आ 'मुक्ति यात्रा'क आरती नारायण अपन-अपन कथामे अलग ऐतिहासिक तथा नाटकीय परिस्थिति लऽ उपस्थित छथि। हुनका सभकेँ एके आधुनिक स्त्री-अस्मिताक प्रतिमा मानि लेब साहित्यिक भिन्नता घटा देत। प्रभाक 'नहि' विवाहक सार्वजनिक समारोहमे उठैत अछि; शोभाक प्रतिष्ठा अफवाहक निशाना बनैत अछि; शिखाक अलग रहबाक इच्छा परिवारक नैतिक निगरानीमे पड़ैत अछि; आरती नारायणक संघर्ष प्रत्यक्ष राजनीतिक संगठनक क्षेत्रमे पहुँचैत अछि।

महिला पात्र 'बोलैत' छथि—एतबा मात्रसँ स्वायत्तता सिद्ध नहि होइत। हुनकर संवाद स्वतन्त्र निर्णयमे परिणत होइत अछि कि कथानक हुनका पुरुष पात्र, परिवार अथवा समूहक पसिन्न परिणाम स्वीकार करवैत अछि? हुनका असहमति लेल कतेक दृश्य आ कतेक अवधि देल गेल अछि? दुःखक बाद हुनकर जीविका, शिक्षा आ भविष्यक प्रश्न केना बचैत अछि? एहि कसौटी सँ छहू अध्ययन एक साझा, परन्तु भेदशील, स्त्रीवादी पुनर्पाठक अवसर दैत अछि।

१२. लोकसमाज : दर्शक, भीड़, पंचायत आ संस्था

लोकसमाज एहि नाटकसभमे कखनो प्रतिरोधक सहयोगी, कखनो नियन्त्रणक औजार बनैत अछि। 'टाकाक मोल'क दर्शक-भीड़ अन्तमे अन्यायपर प्रश्न उठबैत अछि; 'बदलैत समाज'मे सार्वजनिक आरोप लोकनिर्णयकेँ दूषित करैत अछि; 'मुक्ति यात्रा'मे संस्था सामाजिक सहभागिताक रास्ता खोलैत अछि,

मुदा ओकर नामक दुरुपयोग सेहो सम्भव बनैत अछि। सार्वजनिकताकेँ स्वभावतः लोकतान्त्रिक अथवा हिंसक मानि लेब—दुनू अतिसरलीकरण अछि।

नाटकक मंच स्वयं सार्वजनिक स्थान अछि, तेँ मंचपर उपस्थित भीड़ दर्शकक सामाजिक भूमिकाक दोहरा प्रतिबिम्ब बनि सकैत अछि। दर्शक मण्डपक लोकमध्यस्थकेँ देखैत छथि आ अपने सम्भावित मध्यस्थ रूपमे सोचे लगैत छथि। ई नाटकीय व्यवस्था सामाजिक आलोचनाक सामर्थ्य होएत, जँ जनसमूहक भीतर मतभेद, मौन आ शक्ति-वितरण सेहो देखाओल गेल हो। जँ सभ पात्र अन्तमे एक सुरमे बोलए लगैत अछि तऽ मंचीय ऊर्जा बढ़ितहुँ लोक-स्वरक बहुलता कम भऽ सकैत अछि।

चतुर्थ विभाग : शिल्प, समय आ नाटकीय प्रमाण

१३. दृश्य-रचना आ कथानकक कारण-कार्य

छहू समीक्षामे अङ्क-दृश्यक उल्लेख अछि; मुदा अङ्कक संख्या अपने कलात्मक संगठनक प्रमाण नहि। ‘टाकाक मोल’मे घरसँ मण्डप धरि यात्रा, ‘कलह’मे घरेलू ठामसँ चिकित्सालय धरि प्रसार, ‘बदलैत समाज’मे आरोपक क्रमिक प्रसार, ‘धधाइत नवकी कनियाँक लहास’मे पत्रक अवरोध, ‘हठात परिवर्तन’मे सूचना आ अनुपस्थिति, आ ‘मुक्ति यात्रा’मे वैचारिक बहससँ षडयन्त्र धरि बदलल गति—ई सभ अलग-अलग समय-रचना अपनबैत अछि।

नाट्यसमयक विश्लेषण लेल देखबाक चाही जे निर्णायक सूचना दर्शककेँ कहिया देल गेल आ पात्रकेँ कहिया भेटल। पत्र रोकेल गेल अछि तऽ ककरा ई तथ्य मालूम? सैनिक मृत्यु अथवा पुनरागमनक समाचार पहिने ककरा तक पहुँचैत अछि? अफवाहक स्रोत आरम्भमे अस्पष्ट अछि कि दर्शक ओकर वास्तविक उद्देश्य जानैत छथि? एहि प्रश्नक उत्तरसँ नाटकीय विडम्बना, उत्सुकता आ भावप्रभावक वास्तविक तन्त्र सामने अबैत अछि।

१४. संवाद : लोकभाषा, घोषणात्मकता आ मौन

मैथिली सामाजिक नाटकक संवाद जनभाषाक गति, सम्बोधनक बारीकी, हास्य आ प्रतिवादसँ जीवन्त बनैत अछि। घरेलू संबंधमे आदरक प्रयोग, नायकक भावुक प्रतिज्ञा, बिचौलियाक विनोद, पंचायतक औपचारिक निर्णय आ राजनीतिक वक्ताक छलपूर्ण तर्क—ई सभ अलग सामाजिक स्वर अछि। गजेन्द्र ठाकुरक अध्ययनसभ एहन भिन्नताक उल्लेख करैत अछि, मुदा आगामी संस्करणमे प्रत्येक रचनासँ स्पष्ट संवाद-साक्ष्यक तुलनात्मक सारणी आलोचनाकेँ आरो ठोस बना सकैत अछि।

दोसर दिस लम्बा आदर्शवादी वक्तव्य पात्रकेँ विचारक वाहक बनबैत अछि। लोकमंचक दर्शकसमक्ष सामाजिक सन्देश स्पष्ट राखबाक प्रयोजन बुझल जा सकैत अछि, परन्तु नाटकक पात्र जखन अपन जीवनक द्वन्द्व छोड़ि लेखकीय घोषणापत्र बोलए लगैत अछि, तखन अभिनयक सम्भावना घटैत अछि। आलोचनाक प्रश्न संवाद कम वा बेसी होएबाक नहि, बल्कि ओकर नाटकीय आवश्यकता आ पात्रानुकूलताक अछि। एक आवश्यक मौन कहियो लम्बा वक्तव्यसँ अधिक सामाजिक अर्थ उपस्थित कऽ सकैत अछि।

१५. करुणा, वीरता, भय आ मेलोड्रामाक सीमा

‘कलह’क त्रासद परिणति, ‘धधाइत नवकी कनियाँक लहास’क भयकारी शीर्षक, ‘हठात परिवर्तन’क सैनिक बलिदान आ ‘मुक्ति यात्रा’क राजनीतिक खतरा पाठककेँ तीव्र भावोद्वेगक क्षेत्रमे लऽ जाइत अछि। नाटकमे भावनात्मक तीव्रता अपने दोष नहि। मुदा करुणा अर्जित घटनासँ जन्म लैत अछि कि आकस्मिक दुर्घटनाक संचय सँ, वीरता पात्रक जटिल अनुभवसँ जन्म लैत अछि कि पूर्वनिर्धारित भाषण सँ, भय समय-विन्याससँ बनैत अछि कि मात्र शीर्षकसँ—ई भेद आलोचना लेल आवश्यक अछि।

मेलोड्रामा लोकदर्शकसँ तात्कालिक सम्बन्ध बनबैत अछि। स्पष्ट पीड़ित, प्रबल प्रतिपक्ष, नाटकीय खुलासा आ सामूहिक नैतिक समाधान दर्शकक भागीदारी बढ़ा सकैत अछि। तथापि प्रत्येक संघर्षक अन्तमे क्षमा अथवा परिवर्तन उपलब्ध हो, तऽ सामाजिक अन्यायक ऐतिहासिक निरन्तरता छोट भऽ जाइत अछि। एहि

सीमा पर ठाकुरक टिप्पणी रचनासभक कलात्मक अध्ययनकेँ केवल नैतिक सराहना बनबाकसँ रोकैत अछि।

१६. पाठ, मंचन आ ऐतिहासिक दावाक सीमा

'टाकाक मोल'क अध्ययनमे प्रारम्भिक मंचनक विवरण उद्धृत अछि; 'हठात परिवर्तन'मे प्रदर्शन-सूचना आ रंगसम्भावनाक उल्लेख अछि। एहन सूचना नाट्यइतिहास लेल उपयोगी अछि, मुदा नाट्यपाठ, मंचनक आयोजकीय उल्लेख आ अभिनयक प्रत्यक्ष समीक्षा अलग प्रकारक साक्ष्य छथि। कोनो मंचन भेल, ताहिसँ ओकर कलात्मक सफलता वा दर्शक-प्रतिक्रियाक स्तर स्वयंसिद्ध नहि होइत। एहि भेदकेँ सुरक्षित राखब आलोचनाक ईमानदारी अछि।

उद्धृत प्रकाशन-वर्ष आ ऐतिहासिक विवरण उपलब्ध अध्ययनक अनुसार राखल गेल अछि। भविष्यक ग्रन्थसूची-सम्पादनमे प्रथम संस्करणक शीर्षकपृष्ठ, प्रकाशक, संस्करण, मंचनक कार्यक्रम-पत्र आ समकालीन पत्रिकाक सन्दर्भक मिलान कएल जाए तऽ रचनासभक इतिहास आरो प्रमाणित बनत। एहि संस्करणक निर्णयकेँ उपलब्ध अध्ययनक वस्तुस्थितिक भीतर बुझबाक चाही।

पंचम विभाग : समेकित साहित्यिक निर्णय

१७. आलोचनाक सर्वाधिक समर्थ बिन्दु

गजेन्द्र ठाकुरक छह अध्ययनक प्रमुख उपलब्धि सामाजिक समस्याकेँ ओकर कथात्मक रूपसँ जोड़ि देखबाक प्रयास अछि। दहेजक आर्थिक क्रिया, परिवारक श्रम-वितरण, अफवाहक सामाजिक प्रवाह, सन्देश रोकबाक नाटकीय युक्ति, सैनिक सूचना आ सार्वजनिक प्रतिरोधक नामक दुरुपयोग—ई सभ कृतिक विषय मात्र नहि, नाटक बनबाक साधन छथि। आलोचना जखन एहि साधन पर ध्यान दैत अछि, तखन ओ ग्रन्थ-परिचय अथवा नैतिक टीकासँ आगे बढ़ैत अछि।

दोसर उपलब्धि ई जे अध्ययनसभ नाटककारक सामाजिक प्रतिबद्धता स्वीकार करितहुँ कतेको कलात्मक सीमा स्पष्ट करैत अछि। पात्रक अचानक परिवर्तन, समाधानक त्वरित नैतिक घोषणा, लम्बा उपदेश, असमान स्त्री-स्वायत्तता,

सम्भाव्यताक प्रश्न आ मंचन-साक्ष्यक सीमा पर विचार करब आलोचनाकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि। ई संयम कृतिक महत्त्व घटबैत नहि; उलट ओकरा साहित्यिक इतिहासमे सटीक स्थान देबाक आधार बनैत अछि।

१८. जतय पुनर्परीक्षणक आवश्यकता अछि

अध्ययनसभक विषयव्याप्ति व्यापक अछि; तथापि विशाल नैतिक-समाजशास्त्रीय रूपरेखाक तुलना मे कुछ ठाम पाठक छोट-छोट वाचिक भिन्नता, मंचीय वस्तुक प्रत्यक्ष कार्य आ चरित्रक मौनक स्थान आओर सघन परीक्षण माँगैत अछि। नाटकक हर सामाजिक दोषक अन्तर्निहित शिल्पगत परिणाम समान नहि होइत। 'दहेज-विरोधी', 'स्त्रीवादी' अथवा 'राष्ट्रप्रेमी' कहनाइ निष्कर्षक आरम्भ होइत अछि, समापन नहि।

विविध स्रोतक उपयोगक समय पाठक उद्धरण, समीक्षकक व्याख्या आ तुलनात्मक सिद्धान्तक बीच स्पष्ट भेद आवश्यक अछि। पुस्तकमे विशिष्ट ऐतिहासिक व्यक्ति, प्रकाशन-वर्ष, प्रथम मंचन, पुरस्कार वा शोधग्रन्थक उल्लेखक स्वतंत्र ग्रन्थसूची-सत्यापन प्रत्येक प्रसंगमे उपलब्ध नहि अछि। ताहि कारण एहि सम्पादकीय संस्करणमे एहन उल्लेखकेँ स्वतः प्रमाणित इतिहासक रूप नहि देल गेल। वैचारिक तुलना आ अभिलेखीय तथ्य एक स्तर पर नहि राखल जाए, ई आलोचनाक अनिवार्य अनुशासन अछि।

१९. नाटककारक प्रवाह : घरेलू संकटसँ सार्वजनिक सत्ता धरि

उल्लिखित प्रकाशन-वर्षक्रमक अनुसार नाटककारक विषय-विस्तारकेँ पढ़ला पर एक सम्भावित रूपरेखा उभरैत अछि। विवाहक सौदा, पारिवारिक कलह आ चरित्रहननक स्थानीय राजनीति सँ नाटक धीरे-धीरे संयुक्त परिवार, सैनिक अनुशासन आ स्त्री-आन्दोलनक व्यापक संस्थागत क्षेत्र धरि पहुँचैत अछि। एहि क्रमकेँ निर्णायक विकासवाद मानब उचित नहि; वर्षक्रमसँ कलात्मक प्रगति स्वतः सिद्ध नहि होइत। परन्तु सामाजिक स्थानक विस्तार आ संकटक सार्वजनिक रूपक प्रवृत्ति अवश्य पहचानल जा सकैत अछि।

पूर्ववर्ती नाटकसभमे परिवारक भीतर स्त्रीक आवाज अधिकतर निजी सम्मान आ सम्बन्धक निर्णयसँ जुड़ल अछि; 'मुक्ति यात्रा'मे ओ संगठनक पहचान, सार्वजनिक वैधता आ सत्ता-संघर्षक प्रश्न बनैत अछि। ई परिवर्तन अध्ययनक एक अर्थवान तुलनात्मक परिणाम होएत, जँ ओकरा पात्रक वास्तविक निर्णय-अधिकार आ दृश्य-संरचनासँ जोड़ि देखल जाए। विषय बदललासँ स्वतन्त्रता स्वतः बढ़ैत नहि; प्रतिनिधित्वक नब बाधा सेहो उत्पन्न होइत अछि।

२०. अन्तिम मूल्यांकन

आनन्द कुमार झाक एहि छह नाटकपर गजेन्द्र ठाकुरक अध्ययन आधुनिक मैथिली सामाजिक रंगलेखनकेँ लोकजीवन, आर्थिक असमानता, स्त्री-अनुभव आ सार्वजनिक संस्थाक परस्पर सम्बन्धमे पढ़बाक महत्त्वपूर्ण प्रयत्न अछि। एहि अध्ययनसभक सर्वाधिक फलदायी पाठ ओ अछि जे नाटककारक न्यायपूर्ण आकांक्षासँ सहमति रखितो कलात्मक रूपक प्रश्न खुलल राखैत अछि। अच्छा उद्देश्य सफल दृश्य बनबाक गारंटी नहि; असमान दृश्य-रचना सेहो कतेको बेर गम्भीर सामाजिक प्रश्न जन्म दऽ सकैत अछि।

संग्रहक छहू नाटकमे अन्तिम प्रश्न व्यक्ति आ समाजक बीच निर्णयक अधिकारक अछि। कन्याक विवाह कियो तय करत? घरक श्रम आ सम्पत्तिक अधिकार ककर? अफवाहक बीच सत्य कहबाक अवसर ककर? संयुक्त परिवारमे अलग जीवन चुनबाक अधिकार ककर? राष्ट्रक कर्तव्यक नामपर परिवारक दुःख कतेक सुनल जाएत? महिला संगठनक असल आवाज ककरा द्वारा प्रमाणित होएत? एहि प्रश्नसभक कारण छहू आलोचना परस्पर संवाद करैत अछि, आ पाठककेँ सम्पूर्ण मैथिली सामाजिक नाट्यपरम्पराक नब परीक्षण-दृष्टि दैत अछि।

षष्ठ विभाग : कृति-पत्र आ अध्ययन-सन्दर्भ

२१. समीक्षाधीन अध्ययनक पुस्तक-सूची

१. गजेन्द्र ठाकुर। 'टाकाक मोल: दहेज-व्यवस्थाक अर्थशास्त्र, स्त्री-अस्मिता आ मैथिली रंगमंचक नैतिक द्वन्द्व'। 'नित नवल आनन्द कुमार झा'मे समाविष्ट अध्ययन। समीक्षामे निर्दिष्ट मूल नाटकक प्रथम प्रकाशन : २०००।

२. गजेन्द्र ठाकुर। 'कलहक भीतरी संरचना : आर्थिक असुरक्षा, पारिवारिक सत्ता, स्त्री-अस्मिता आ त्रासदीक नाटयविधान'। पूर्वोक्त संग्रह। मूल नाटकक उल्लिखित प्रथम प्रकाशन : २००१।

३. गजेन्द्र ठाकुर। 'चरित्रहननक राजनीति, लोकनैतिकता आ बदलैत समाज'। पूर्वोक्त संग्रह। मूल नाटकक उल्लिखित प्रथम प्रकाशन : २००२।

४. गजेन्द्र ठाकुर। 'धधाइत नवकी कनियाँक लहास : पारिवारिक विखण्डन, स्त्री-स्वायत्तता आ नैतिक भयक नाट्यशास्त्रीय समीक्षा'। पूर्वोक्त संग्रह। मूल नाटकक उल्लिखित प्रथम प्रकाशन : २००३।

५. गजेन्द्र ठाकुर। 'हठात परिवर्तन : सैनिक शौर्य, पारिवारिक विघटन आ नाटकीय आत्मबोधक द्वन्द्व'। पूर्वोक्त संग्रह। मूल नाटकक उल्लिखित प्रथम प्रकाशन : २००५।

६. गजेन्द्र ठाकुर। 'मुक्ति यात्राक नाट्यदृष्टि : स्त्री-अस्मिता, संस्थागत सत्ता आ प्रतिरोधक रंग-व्याकरण'। पूर्वोक्त संग्रह। मूल नाटकक उल्लिखित प्रथम प्रकाशन : २०१७।

२२. अतिरिक्त ग्रन्थसन्दर्भ

झा, आनन्द कुमार। टाकाक मोल। प्रथम संस्करण, २०००; कलह, प्रथम प्रकाशन २००१; बदलैत समाज, प्रथम प्रकाशन २००२; धधाइत नवकी कनियाँक लहास, प्रथम प्रकाशन २००३; हठात परिवर्तन, प्रथम प्रकाशन २००५; मुक्ति यात्रा, प्रथम प्रकाशन २०१७। एतय उल्लिखित वर्षसभ समीक्षाधीन संग्रहक अनुसार अछि।

बूरदियू, पिएर। "The Forms of Capital." John G. Richardson (सम्पा.), Handbook of Theory and Research for the Sociology of Education, १९८६।

झा, सुधीप कुमार। Maithili Naach: A Need for Redrawing the Boundary। त्रिभुवन विश्वविद्यालय, २००८।

सञ्जीवनी, सपना। Dramatization of Women's Identity: A Feminist Reading of Selected Maithili Dramas। त्रिभुवन विश्वविद्यालय, २०२२।

डायमण्ड, क्रिस्टोफर एल. "The 'Indescribable Country': Locating Mithila between Bengal and the Hindi Heartland in Raghunandana Das's Mithilānāṭaka." Asian Ethnology, खण्ड ८५, अंक १, २०२६।

ठाकुर, गजेन्द्र। "मैथिली नाट्यमंच/ नाटक लेल एकटा समीक्षा सिद्धान्त" (भाग १-७)। विदेह, २०२६।

२३. अगिला अनुशीलनक पाँच प्रश्न

प्रथम, छहू नाटकमे स्त्रीक निर्णयक अधिकार जाहि दृश्यपर सर्वाधिक स्पष्ट होइत अछि, ओकरा ठीक बादक दृश्य ओ अधिकारकेँ केना सुरक्षित अथवा सीमित करैत अछि?

द्वितीय, बिचौलिया, परिवारक मुखिया, पंचायत, सेना आ महिला-मण्डली—ई संस्थागत भूमिकासभ कोन दृश्य-नियम द्वारा व्यक्तिक जीवनमे हस्तक्षेप करैत अछि?

तृतीय, नाटकक घटना-क्रम आ दर्शककेँ प्राप्त सूचनाक क्रम अलग लिखलासँ अचानक परिवर्तन, दुर्घटना, अफवाह आ षडयन्त्रक संरचना कोना खुलैत अछि?

चतुर्थ, जकर नैतिक पक्ष नाटक आरम्भसँ तय कऽ दैत अछि, ओ पात्र अपन स्वतन्त्र आवाज बचा पबैत अछि कि मात्र विचारक प्रवक्ता रहि जाइत अछि?

पंचम, पुस्तकमे उल्लिखित मूल ग्रन्थ, मंचन आ ऐतिहासिक सन्दर्भक स्वतंत्र प्रतिक मिलान कएल जाए तऽ वर्तमान आलोचनाक कोन स्थापना पुष्ट, संशोधित अथवा पुनःविचारणीय होयत?

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–८६

एहि खण्डमे गजेन्द्र ठाकुरक 'नित नवल आनन्द कुमार झा' ग्रन्थमे सङ्कलित छह नाट्यसमीक्षाक सम्पादकीय पुनर्पाठ अछि—'टाकाक मोल', 'कलह', 'बदलैत समाज', 'धधाइत नवकी कनियाँक लहास', 'हठात परिवर्तन' आ 'मुक्ति यात्रा'।

दहेज, बेरोजगारी, पारिवारिक सत्ता, चरित्रहनन, स्त्रीक निर्णय-अधिकार, सैनिक कर्तव्य आ महिला-संगठनक जटिलता एहि अध्ययनक केन्द्र अछि। मूल समीक्षा आ सम्पादकीय मूल्यांकनकेँ अलग राखि कथानक, पात्र, संवाद, दृश्य-विन्यास आ रंगमंचीय सम्भावनाक परीक्षण कएल गेल अछि।

सामाजिक न्यायक आकांक्षा आ कलात्मक सिद्धिक अन्तर, नाटकीय परिवर्तनक विश्वसनीयता तथा स्रोत-साक्ष्यक सीमा एहि खण्डक आलोचनात्मक प्रश्न छथि।

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह

विदेह डिजिटल संग्रह

© 2027 Gajendra Thakur / Preeti Thakur